वन्य समाज और उपनिवेशवाद

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» वन-समाज और उपनिवेशवाद का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). आधुनिक विश्व के निर्माण में किन दो समुदायों की भूमिका पर हम इस खंड में चर्चा करेंगे?
उत्तर – वनवासी और चरवाहा समुदाय।

प्रश्न 2 (आसान). क्या वनवासी और चरवाहे आज की दुनिया का हिस्सा नहीं हैं?
उत्तर – नहीं, वे भी आज की दुनिया का पूरी तरह हिस्सा हैं।

प्रश्न 3 (मध्यम). हमें इन समुदायों के जीवन को समझना क्यों ज़रूरी है?
उत्तर – उनके जीवन को समझे बिना हम आज की दुनिया और आधुनिकीकरण की समस्याओं को पूरी तरह नहीं समझ पाएंगे।

प्रश्न 4 (कठिन). अगर जंगल और चारागाह न होते तो आधुनिक अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता?
उत्तर – आधुनिक अर्थव्यवस्था के कई महत्वपूर्ण उद्योग (जैसे लकड़ी, कागज, चमड़ा) और खाद्य उत्पादन (कृषि विस्तार) पर सीधा और नकारात्मक प्रभाव पड़ता, जिससे आर्थिक विकास की गति धीमी हो जाती।

» जंगल का महत्व और वन-विनाश की शुरुआत

प्रश्न 5 (आसान). वन-विनाश का सबसे सीधा अर्थ क्या है?
उत्तर – जंगलों का खत्म होना या काटा जाना।

प्रश्न 6 (आसान). अंग्रेजों ने किस उपयोग के लिए बड़े पैमाने पर जंगल काटे?
उत्तर – खेती, रेल पटरी के स्लीपर और चाय/कॉफी के बागान।

प्रश्न 7 (मध्यम). औपनिवेशिक काल में वन-विनाश के किन्हीं दो मुख्य कारणों के नाम बताइए।
उत्तर – खेती का विस्तार और रेल लाइनों का निर्माण।

प्रश्न 8 (कठिन). आज भी वन-विनाश क्यों एक बड़ी समस्या है? कोई एक कारण बताओ।
उत्तर – यह जलवायु परिवर्तन, वन्यजीवों के आवास के नुकसान और मिट्टी के कटाव जैसी समस्याओं को बढ़ाता है।

» खेती के विस्तार और वन-विनाश

प्रश्न 9 (आसान). औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार ने किन फसलों के उत्पादन को बढ़ावा दिया?
उत्तर – पटसन, गन्ना, गेहूं, कपास।

प्रश्न 10 (आसान). ब्रिटिश सरकार जंगलों को किस प्रकार की ज़मीन मानती थी?
उत्तर – अनुत्पादक।

प्रश्न 11 (मध्यम). यूरोप में बढ़ती शहरी आबादी को किस चीज़ की ज़रूरत थी जिसने भारत में खेती के विस्तार को बढ़ावा दिया?
उत्तर – खाद्यान्न और औद्योगिक उत्पादन के लिए कच्चे माल की।

प्रश्न 12 (कठिन). खेती के विस्तार को विकास का सूचक क्यों माना जाता है, लेकिन इसके नकारात्मक पहलू क्या थे?
उत्तर – खेती का विस्तार अक्सर बढ़ती आबादी के लिए भोजन और अर्थव्यवस्था के लिए आय का स्रोत होता है, इसलिए इसे विकास का सूचक माना जाता है। लेकिन इसका नकारात्मक पहलू यह था कि इसके लिए बड़े पैमाने पर जंगलों की कटाई (वन-विनाश) करनी पड़ती थी, जिससे पर्यावरण को भारी नुकसान हुआ और जैव विविधता कम हुई।

» रेलवे और जहाजों के लिए लकड़ी की मांग

प्रश्न 13 (आसान). रेलवे के इंजन चलाने के लिए ईंधन के तौर पर किस चीज़ का इस्तेमाल होता था?
उत्तर – लकड़ी का।

प्रश्न 14 (आसान). रेल की पटरी को जोड़े रखने के लिए किसका उपयोग होता था?
उत्तर – स्लीपर का।

प्रश्न 15 (मध्यम). एक मील लंबी रेल की पटरी के लिए लगभग कितने स्लीपर चाहिए होते थे?
उत्तर – 1760 से 2000 स्लीपर।

प्रश्न 16 (कठिन). औपनिवेशिक काल में जहाजों और रेलवे के लिए लकड़ी की मांग ने वन-विनाश को कैसे बढ़ावा दिया?
उत्तर – जहाजों के निर्माण और मरम्मत के लिए, साथ ही रेल इंजनों के लिए ईंधन और पटरियों के लिए स्लीपर बनाने के लिए भारी मात्रा में पेड़ों को काटा गया, जिससे बड़े पैमाने पर वन-विनाश हुआ।

» बागानों का विकास और वन-सफाई

प्रश्न 17 (आसान). यूरोप में किन वस्तुओं की मांग बढ़ने से भारत में बागान विकसित हुए?
उत्तर – चाय, कॉफ़ी, रबड़।

प्रश्न 18 (आसान). बागानों के लिए कौन से पेड़ों को साफ किया गया?
उत्तर – प्राकृतिक वनों में मौजूद सभी तरह के पेड़।

प्रश्न 19 (मध्यम). औपनिवेशिक सरकार ने बागानों के विकास के लिए भूमि कैसे उपलब्ध कराई?
उत्तर – उन्होंने जंगलों को अपने कब्ज़े में लेकर उनके विशाल हिस्सों को बहुत सस्ती दरों पर यूरोपीय बागान मालिकों को सौंप दिया।

प्रश्न 20 (कठिन). बागानों के विकास से प्राकृतिक वनों को क्या नुकसान हुआ?
उत्तर – बागानों के विकास से प्राकृतिक वनों का एक बड़ा हिस्सा साफ कर दिया गया। इससे वनस्पति और जीव-जंतुओं की विविधता नष्ट हुई, और केवल कुछ ही प्रकार के व्यावसायिक पेड़ लगाए गए।

» व्यावसायिक वानिकी की शुरुआत और डायट्रिच ब्रैंडिस

प्रश्न 21 (आसान). भारत का पहला वन महानिदेशक किसे नियुक्त किया गया था?
उत्तर – डायट्रिच ब्रैंडिस

प्रश्न 22 (आसान). डायट्रिच ब्रैंडिस ने वनों के प्रबंधन के लिए कौन सी प्रणाली शुरू की?
उत्तर – वैज्ञानिक वानिकी

प्रश्न 23 (मध्यम). वैज्ञानिक वानिकी का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – इसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सरकार के लिए लकड़ी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना था, विशेषकर रेलवे और जहाजों के लिए।

प्रश्न 24 (कठिन). वैज्ञानिक वानिकी को आज 'वैज्ञानिक' क्यों नहीं माना जाता है, जबकि इसका नाम ऐसा है?
उत्तर – क्योंकि इस प्रणाली में प्राकृतिक वनों को काटकर एक ही प्रकार के पेड़ एक लाइन में लगाए जाते थे, जिससे जंगल की जैव विविधता (अलग-अलग तरह के जीव-जंतु और पेड़-पौधे) खत्म हो जाती थी, जो पारिस्थितिकी के लिए बिल्कुल भी वैज्ञानिक नहीं है।

» भारतीय वन अधिनियम और वनों का वर्गीकरण

प्रश्न 25 (आसान). भारतीय वन सेवा की स्थापना किस वर्ष हुई थी?
उत्तर – 1864 में

प्रश्न 26 (आसान). इम्पीरियल फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट कहाँ स्थापित किया गया था?
उत्तर – देहरादून में

प्रश्न 27 (मध्यम). 1878 के वन अधिनियम के तहत जंगलों के तीन वर्गीकरणों के नाम बताओ।
उत्तर – आरक्षित वन, सुरक्षित वन, और ग्रामीण वन।

प्रश्न 28 (कठिन). आरक्षित वनों और सुरक्षित वनों में ग्रामीणों के अधिकारों में क्या मुख्य अंतर था?
उत्तर – आरक्षित वनों से ग्रामीण अपने उपयोग के लिए कुछ भी नहीं ले सकते थे, जबकि सुरक्षित वनों से वे घर बनाने या ईंधन के लिए लकड़ी जैसी कुछ चीजें, पाबंदियों के साथ, ले सकते थे।

» वन कानूनों का लोगों के जीवन पर प्रभाव

प्रश्न 29 (आसान). ब्रिटिश वन कानूनों से सबसे ज्यादा कौन प्रभावित हुए?
उत्तर – गाँव के लोग या ग्रामीण।

प्रश्न 30 (आसान). कौन सी गतिविधि गैरकानूनी हो गई जिसके कारण औरतों को विशेष परेशानी हुई?
उत्तर – जलावन लकड़ी इकट्ठा करना।

प्रश्न 31 (मध्यम). वन रक्षक ग्रामीणों का उत्पीड़न कैसे करते थे?
उत्तर – वन रक्षक पकड़े जाने पर ग्रामीणों से रिश्वत लेते थे और मुफ्त खाने-पीने की मांग कर उन्हें तंग करते थे।

प्रश्न 32 (कठिन). वन कानूनों के लागू होने के बाद ग्रामीणों के पास जंगलों से लकड़ी प्राप्त करने का क्या एक मात्र तरीका बचा?
उत्तर – जंगलों से लकड़ी चुराने के अलावा उनके पास कोई चारा नहीं बचा था, जिसके कारण उन्हें पकड़े जाने पर वन-रक्षकों की दया पर निर्भर रहना पड़ता था।

» घुमंतू खेती पर प्रतिबंध और उसके परिणाम

प्रश्न 33 (आसान). घुमंतू खेती के कुछ स्थानीय नाम बताओ जो भारत में प्रचलित थे।
उत्तर – धया, पेंदा, बेवर, नेवड़, झूम, पोडू, खंदाद और कुमरी।

प्रश्न 34 (आसान). अंग्रेज़ों को घुमंतू खेती से मुख्य रूप से क्या नुकसान लगता था?
उत्तर – उन्हें लगता था कि जंगल जलाते समय इमारती लकड़ी वाले पेड़ जल जाते हैं और उन्हें रेलवे के लिए लकड़ी नहीं मिल पाती।

प्रश्न 35 (मध्यम). घुमंतू खेती के तरीके को समझाओ और बताओ कि यह क्यों पारंपरिक रूप से अपनाया जाता था?
उत्तर – घुमंतू खेती में जंगल के कुछ भागों को बारी-बारी से काटा और जलाया जाता था। मॉनसून की पहली बारिश के बाद राख में बीज बो दिए जाते और फसल काटी जाती थी। दो-एक साल खेती करने के बाद उस ज़मीन को 12 से 18 साल तक परती छोड़ दिया जाता था ताकि वहाँ फिर से जंगल उग जाए और ज़मीन की उर्वरता वापस आ जाए। यह एक ऐसा पारंपरिक तरीका था जो प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर खेती करने में मदद करता था।

प्रश्न 36 (कठिन). घुमंतू खेती पर प्रतिबंध के बाद आदिवासी समुदायों को किन मुश्किलों का सामना करना पड़ा? विस्तार से बताओ।
उत्तर – प्रतिबंध के बाद कई समुदायों को जंगलों में उनके घरों से जबरन विस्थापित कर दिया गया। उन्हें अपना पारंपरिक पेशा बदलना पड़ा और नए काम ढूंढने पड़े, जो अक्सर मुश्किल और कम मज़दूरी वाले होते थे। कई बार उन्हें 'अपराधी कबीले' भी कहा जाने लगा और वे सरकार की निगरानी में फैक्ट्रियों या खदानों में काम करने को मजबूर हो गए। इससे उनकी पूरी जीवनशैली, संस्कृति और सामाजिक ताना-बाना बिखर गया, और उन्हें गरीबी व शोषण का सामना करना पड़ा। बैगा समुदाय की याचिका, जिसमें उन्होंने लिखा 'हम अब खाने के लिए मर रहे हैं,' इन्हीं मुश्किलों को दर्शाती है।

» शिकार के अधिकार और बड़े जानवरों का आखेट

प्रश्न 37 (आसान). अंग्रेजों ने वनवासियों के किस पारंपरिक अधिकार पर रोक लगाई?
उत्तर – शिकार करने के अधिकार पर।

प्रश्न 38 (आसान). बड़े जानवरों का आखेट अंग्रेजों के लिए क्या था?
उत्तर – एक खेल और सभ्यता का प्रतीक।

प्रश्न 39 (मध्यम). वन कानूनों के तहत शिकार करते हुए पकड़े जाने पर वनवासियों को क्या होता था?
उत्तर – उन्हें अवैध शिकार के लिए दंडित किया जाता था।

प्रश्न 40 (कठिन). यह कथन 'जहाँ वन कानूनों ने लोगों को शिकार के परंपरागत अधिकार से वंचित किया, वहीं बड़े जानवरों का आखेट एक खेल बन गया' - औपनिवेशिक नीतियों के किस विरोधाभास को दर्शाता है?
उत्तर – यह औपनिवेशिक नीतियों के दोहरे मापदंड को दर्शाता है, जहाँ एक ही चीज़ (शिकार) आम लोगों के लिए अपराध थी, लेकिन शासकों (अंग्रेजों) के लिए शौक़ और शक्ति प्रदर्शन का साधन।

» नए व्यापार, रोजगार और वन-समुदायों का शोषण

प्रश्न 41 (आसान). ब्रिटिश सरकार ने किन कंपनियों को वन-उत्पादों के व्यापार की 'इजारेदारी' दी?
उत्तर – बड़ी यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों को।

प्रश्न 42 (आसान). स्थानीय लोगों पर जंगलों में किन दो चीज़ों पर पाबंदी लगाई गई थी?
उत्तर – शिकार करने और पशुओं को चराने पर।

प्रश्न 43 (मध्यम). 'इजारेदारी' का क्या मतलब है और इसका वन-समुदायों पर क्या असर पड़ा?
उत्तर – 'इजारेदारी' का मतलब है एकाधिकार। इसका असर यह हुआ कि स्थानीय लोगों को जंगल के संसाधनों से दूर कर दिया गया और उनकी जीविका छीन ली गई।

प्रश्न 44 (कठिन). नए व्यापार और रोजगार के अवसर वन-समुदायों के लिए शोषणकारी क्यों साबित हुए? उदाहरण सहित समझाओ।
उत्तर – नए व्यापार और रोजगार शोषणकारी साबित हुए क्योंकि उन्हें अपनी परंपरागत जीविका से वंचित कर दिया गया। उन्हें 'अपराधी कबीले' कहकर जबरन फैक्ट्रियों, खदानों और चाय बागानों में बहुत कम मजदूरी पर और खराब परिस्थितियों में काम करने को मजबूर किया गया। उदाहरण के लिए, असम के चाय बागानों में झारखंड के संथाल और उराँव जैसे आदिवासी मज़दूरों से अमानवीय परिस्थितियों में काम करवाया जाता था।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. आधुनिक विश्व के उदय को समझने में वनवासी और चरवाहा समुदायों की भूमिका क्यों महत्वपूर्ण है?

› पहला कदम है यह समझना कि आधुनिक दुनिया केवल शहरों और उद्योगों से नहीं बनी है, बल्कि इसमें प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों का भी बहुत बड़ा योगदान है।

› दूसरा, ये वनवासी और चरवाहे सीधे तौर पर इन प्राकृतिक संसाधनों, जैसे जंगल और चारागाह, से जुड़े होते हैं।

› तीसरा, जब औपनिवेशिक काल में इन संसाधनों का व्यावसायिक उपयोग बढ़ा, तो इन समुदायों के जीवन और उनके तरीकों में बड़े बदलाव आए, जिसका सीधा असर आधुनिक अर्थव्यवस्था पर पड़ा।

› आखिर में, उनके संघर्ष और जीवन-शैली को समझे बिना हम यह नहीं जान सकते कि आज के पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज में जो भी समस्याएं हैं, वे कहाँ से शुरू हुईं।

उत्तर – आधुनिक विश्व की पूरी तस्वीर को समझने और उसके पर्यावरणीय तथा सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करने के लिए वनवासी और चरवाहा समुदायों की भूमिका और उनके जीवन में आए बदलावों को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

उदाहरण 2. मान लीजिए, 1860 में अंग्रेजों को एक मील लंबी रेल पटरी बिछानी थी। यदि एक मील पटरी के लिए 1760 स्लीपर की ज़रूरत थी और एक पेड़ से औसतन 4 स्लीपर बनते थे, तो उस एक मील पटरी के लिए कितने पेड़ काटे गए होंगे?

› सबसे पहले हमें यह देखना है कि एक मील पटरी के लिए कितने स्लीपर चाहिए: 1760 स्लीपर।

› फिर, यह देखना है कि एक पेड़ से कितने स्लीपर बनते हैं: 4 स्लीपर।

› अब, कुल स्लीपर की संख्या को एक पेड़ से बनने वाले स्लीपर की संख्या से भाग देंगे: 1760 / 4।

› तो, 1760 को 4 से भाग देने पर 440 आता है।

उत्तर – उस एक मील पटरी के लिए 440 पेड़ काटे गए होंगे।

उदाहरण 3. औपनिवेशिक काल में खेती के विस्तार के कारण वन-विनाश की दो मुख्य वजहें बताओ।

› पहला कारण था यूरोप की बढ़ती आबादी और उनकी फैक्ट्रियों के लिए कच्चे माल की ज़रूरत।

› दूसरा कारण था, ब्रिटिश सरकार जंगलों को 'अनुत्पादक' मानती थी और उन्हें खेती योग्य बनाकर ज़्यादा राजस्व (टैक्स) और कृषि उत्पाद पैदा करना चाहती थी।

उत्तर – यूरोप की बढ़ती ज़रूरतें और ब्रिटिश सरकार की राजस्व बढ़ाने की नीति।

उदाहरण 4. अगर एक ट्रेन इंजन को 50 किलोमीटर चलने के लिए 200 किलोग्राम लकड़ी की ज़रूरत पड़ती है, और एक दिन में ऐसी 10 ट्रेनें चलती हैं जो कुल 200 किलोमीटर का सफर तय करती हैं, तो प्रतिदिन कुल कितनी लकड़ी ईंधन के रूप में चाहिए होगी?

› सबसे पहले, एक ट्रेन के 1 किलोमीटर चलने में लगने वाली लकड़ी निकालते हैं: 200 किलोग्राम / 50 किलोमीटर = 4 किलोग्राम प्रति किलोमीटर।

› अब देखते हैं 10 ट्रेनें मिलकर कुल कितना सफर तय करती हैं: 10 ट्रेनें * 200 किलोमीटर/ट्रेन = 2000 किलोमीटर।

› अब कुल दूरी के लिए आवश्यक लकड़ी निकालते हैं: 2000 किलोमीटर * 4 किलोग्राम/किलोमीटर = 8000 किलोग्राम।

› इसे क्विंटल में बदलें (क्योंकि 1 क्विंटल = 100 किलोग्राम): 8000 किलोग्राम / 100 = 80 क्विंटल।

› यानी, प्रतिदिन कुल 8000 किलोग्राम या 80 क्विंटल लकड़ी की आवश्यकता होगी।

उत्तर – प्रतिदिन 8000 किलोग्राम (या 80 क्विंटल) लकड़ी।

उदाहरण 5. ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान, प्राकृतिक वनों को साफ करके किस प्रकार के बागानों का विकास किया गया और क्यों?

› पहला कदम: यूरोप में चाय, कॉफ़ी और रबड़ जैसे उत्पादों की मांग में अत्यधिक वृद्धि हुई।

› दूसरा कदम: इस मांग को पूरा करने के लिए, ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने भारत के विशाल प्राकृतिक वन क्षेत्रों को चिह्नित किया।

› तीसरा कदम: इन वन क्षेत्रों को यूरोपीय बागान मालिकों को बहुत कम दरों पर पट्टे पर दिया गया।

› चौथा कदम: बागान मालिकों ने इन क्षेत्रों की बाड़बंदी की और सभी प्राकृतिक वनों को पूरी तरह से साफ कर दिया।

› पांचवां कदम: साफ की गई भूमि पर बड़े पैमाने पर केवल चाय, कॉफ़ी और रबड़ के पौधे लगाए गए, जिससे 'बागानों' का विकास हुआ। यह एक प्रकार की 'एकल फसल' (monoculture) खेती थी, जहाँ विविधता वाले प्राकृतिक वन हटाकर सिर्फ एक ही प्रकार के पेड़ लगाए जाते थे।

उत्तर – ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान, प्राकृतिक वनों को साफ करके मुख्य रूप से चाय, कॉफ़ी और रबड़ के बागानों का विकास किया गया, ताकि यूरोप में इन उत्पादों की बढ़ती हुई व्यावसायिक मांग को पूरा किया जा सके।

उदाहरण 6. ब्रिटिश सरकार ने डायट्रिच ब्रैंडिस को भारत का पहला वन महानिदेशक क्यों नियुक्त किया और उन्होंने 'वैज्ञानिक वानिकी' की शुरुआत कैसे की?

› पहला कदम: अंग्रेजों को रेलवे, जहाजों और बागानों के लिए लकड़ी की भारी जरूरत थी, लेकिन जंगल तेजी से खत्म हो रहे थे।

› दूसरा कदम: उन्हें लगा कि वनों का व्यवस्थित प्रबंधन जरूरी है ताकि लकड़ी की आपूर्ति बनी रहे।

› तीसरा कदम: उन्होंने जर्मन विशेषज्ञ डायट्रिच ब्रैंडिस को बुलाया, जिन्हें वन प्रबंधन का अनुभव था, और उन्हें पहला वन महानिदेशक बनाया।

› चौथा कदम: ब्रैंडिस ने 'वैज्ञानिक वानिकी' प्रणाली शुरू की। इसमें जंगलों का सर्वेक्षण किया गया और तय किया गया कि कौन से पेड़, कितनी मात्रा में और कब काटे जाएंगे।

› पांचवां कदम: उन्होंने पुराने, प्राकृतिक पेड़ों को कटवाकर उनकी जगह एक ही प्रकार के सीधे और लंबे पेड़ (जैसे सागौन और साल) एक लाइन में लगाए, ताकि आसानी से उन्हें काटा जा सके और लकड़ी मिलती रहे।

› छठा कदम: इसके लिए उन्होंने 1864 में भारतीय वन सेवा की स्थापना की और 1865 में भारतीय वन अधिनियम बनाने में मदद की।

उत्तर – डायट्रिच ब्रैंडिस को लकड़ी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त किया गया था। उन्होंने वनों का सर्वेक्षण, पेड़ों की व्यवस्थित कटाई और एक ही प्रकार के पेड़ों को पंक्ति में लगाने वाली 'वैज्ञानिक वानिकी' प्रणाली की शुरुआत की, साथ ही भारतीय वन सेवा और वन अधिनियम भी स्थापित किए।

उदाहरण 7. ब्रिटिश सरकार ने 1878 के वन अधिनियम के तहत जंगलों को कितने मुख्य वर्गों में बांटा और उनकी क्या विशेषता थी?

› पहला कदम: 1878 के अधिनियम को याद करो। यह वो संशोधन था जब वर्गीकरण किया गया था।

› दूसरा कदम: याद करो कि कितने वर्ग थे। कुल तीन मुख्य वर्ग थे।

› तीसरा कदम: हर वर्ग का नाम और उसकी विशेषता बताओ।

› आरक्षित वन (Reserved Forests): ये सबसे अच्छे जंगल थे। यहाँ से गाँव वाले कुछ भी नहीं ले सकते थे - न लकड़ी, न फल, न सब्ज़ियाँ।

› सुरक्षित वन (Protected Forests): इन जंगलों में गाँव वाले कुछ पाबंदियों के साथ लकड़ी या अन्य चीजें ले सकते थे, जैसे घर बनाने या ईंधन के लिए।

› ग्रामीण वन (Village Forests): ये गाँव के पास के जंगल होते थे। यहाँ से थोड़ी ज़्यादा छूट होती थी, लेकिन फिर भी नियम होते थे।

उत्तर – 1878 के वन अधिनियम के तहत जंगलों को तीन मुख्य वर्गों में बांटा गया: आरक्षित वन, सुरक्षित वन, और ग्रामीण वन। आरक्षित वनों में गाँव वालों को कोई अधिकार नहीं था, सुरक्षित वनों में कुछ सीमित अधिकार थे, और ग्रामीण वनों में तुलनात्मक रूप से अधिक अधिकार थे, मुख्यतः घर बनाने या ईंधन के लिए लकड़ी लेने के।

उदाहरण 8. वन कानूनों के कारण ग्रामीणों की किन्हीं तीन दैनिक गतिविधियों का उल्लेख कीजिए जो गैरकानूनी हो गईं।

› पहला, ग्रामीण अपने घरों के लिए जंगल से सूखी या गिरी हुई लकड़ियाँ लाते थे, जो अब गैरकानूनी हो गया।

› दूसरा, वे अपने पशुओं, जैसे गाय-भैंसों को जंगल में चराने ले जाते थे, लेकिन नए कानूनों के बाद यह भी वर्जित हो गया।

› तीसरा, जंगलों से कंद-मूल, फल, और औषधीय जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करना उनकी रोज़मर्रा की ज़रूरत थी, जो अब वे नहीं कर सकते थे।

उत्तर – वन कानूनों के कारण ग्रामीणों की घर के लिए लकड़ी काटना, पशुओं को चराना, और कंद-मूल-फल इकट्ठा करना जैसी गतिविधियाँ गैरकानूनी हो गईं।

उदाहरण 9. घुमंतू खेती पर प्रतिबंध के मुख्य कारण क्या थे, और इसके दो प्रमुख परिणाम क्या हुए?

› सबसे पहले, समझते हैं कि अंग्रेज़ों को घुमंतू खेती से क्या परेशानी थी। उन्हें लगता था कि जब किसान जंगल के कुछ हिस्से जलाते हैं, तो valuable इमारती लकड़ी वाले पेड़ जल जाते हैं और उन्हें रेलवे के लिए लकड़ी नहीं मिल पाती।

› दूसरा, उन्हें यह भी लगता था कि ऐसे खेतों पर लगान का हिसाब रखना मुश्किल है, क्योंकि किसान एक जगह स्थायी रूप से नहीं रहते।

› अब देखते हैं परिणाम। पहला परिणाम यह हुआ कि जिन समुदायों की आजीविका ही घुमंतू खेती पर निर्भर थी, उन्हें अपने घरों से जबरदस्ती निकाल दिया गया, या उन्हें अपना पारंपरिक काम छोड़ना पड़ा।

› दूसरा परिणाम यह था कि कई समुदायों ने इस अन्याय के खिलाफ छोटे-बड़े विद्रोह किए, क्योंकि वे अपनी ज़मीन और जीवन जीने के तरीके को छोड़ना नहीं चाहते थे।

उत्तर – घुमंतू खेती पर प्रतिबंध के मुख्य कारण थे जंगलों को इमारती लकड़ी के लिए बचाना और लगान का हिसाब आसान बनाना। इसके दो प्रमुख परिणाम थे - समुदायों का विस्थापन और उनके द्वारा किए गए विद्रोह।

उदाहरण 10. वन कानूनों ने वनवासियों के शिकार के अधिकार को कैसे प्रभावित किया, और अंग्रेजों की इसमें क्या भूमिका थी?

› वन कानूनों से पहले, जंगल में रहने वाले लोग हिरन, तीतर जैसे छोटे जानवरों का शिकार करते थे। यह उनके जीवनयापन का पारंपरिक तरीका था।

› अंग्रेजों ने नए वन कानून बनाए, जिनके तहत इस पारंपरिक शिकार को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया।

› शिकार करते हुए पकड़े जाने पर वनवासियों को सज़ा दी जाती थी।

› इसके विपरीत, अंग्रेजों ने बड़े जानवरों जैसे बाघ, तेंदुए का शिकार करना एक 'खेल' और 'सभ्यता' का प्रतीक मान लिया।

› अंग्रेजों ने बड़े जानवरों के शिकार पर इनाम भी दिए, यह कहकर कि ये जानवर किसानों के लिए खतरा हैं। इससे 1875-1925 के बीच लाखों जानवर मारे गए।

› इस तरह, एक ही जंगल में, एक वर्ग के लिए शिकार अपराध था, तो दूसरे वर्ग के लिए शौक़।

उत्तर – वन कानूनों ने वनवासियों के पारंपरिक शिकार को गैर-कानूनी बनाकर उनसे उनका जीवनयापन का साधन छीन लिया, जबकि अंग्रेजों ने बड़े जानवरों का आखेट एक खेल के रूप में किया और इसे अपनी सभ्यता का प्रतीक माना।

उदाहरण 11. वन-समुदायों को 'अपराधी कबीले' क्यों कहा गया और इसका उन पर क्या असर पड़ा?

› ब्रिटिश सरकार ने जब वन-उत्पादों के व्यापार पर यूरोपीय कंपनियों को 'इजारेदारी' दी, तो उन्होंने स्थानीय लोगों को जंगल के संसाधनों से दूर कर दिया।

› जो समुदाय पहले जंगल पर निर्भर थे, जैसे कोरावा, कराचा, येरुवुला, उन्हें अपनी जीविका से हाथ धोना पड़ा।

› अपनी रोज़ी-रोटी के लिए संघर्ष कर रहे इन समुदायों को, जो अब सरकार के लिए 'गैरकानूनी' काम करते दिखते थे, 'अपराधी कबीले' का ठप्पा दे दिया गया।

› इस ठप्पे के कारण उन्हें सरकारी निगरानी में फैक्ट्रियों, खदानों और बागानों में बहुत कम मजदूरी पर और खराब परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया गया।

उत्तर – वन-समुदायों को 'अपराधी कबीले' इसलिए कहा गया क्योंकि ब्रिटिश कानूनों के कारण उन्हें अपनी परंपरागत जीविका चलाने से रोका गया। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें अपनी मर्ज़ी के खिलाफ जाकर मज़दूरी करने के लिए मजबूर किया गया, जहाँ उनका शोषण हुआ।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा सीधे तौर पर बोर्ड परीक्षा में बड़े प्रश्न के रूप में कम आती है, लेकिन यह पूरे खंड की नींव है। इसे अच्छे से समझने से बाकी अध्यायों के प्रश्नों का उत्तर देना आसान हो जाता है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 'औपनिवेशिक काल में वन-विनाश के कारणों' पर सीधा प्रश्न के रूप में आता है। सभी कारणों को बिंदुओं में याद रखना और उन्हें समझाना ज़रूरी है।

• यह बहुत महत्वपूर्ण अवधारणा है! इस पर अक्सर 'वन-विनाश के कारणों' पर सीधा प्रश्न आता है, जिसमें खेती के विस्तार वाले बिंदु को विस्तार से समझाना होता है।

• रेलवे और जहाजों के लिए लकड़ी की मांग पर अक्सर 3 या 5 नंबर का प्रश्न आता है, तो इन दोनों कारणों को अलग-अलग समझाते हुए लिखना बहुत ज़रूरी है।

• यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि ब्रिटिश काल में वन विनाश के क्या कारण थे। रेलवे और जहाज़ निर्माण के साथ-साथ, 'बागानों का विकास' भी एक प्रमुख कारण था, जिसे अच्छे से समझाना है।

• यह प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में आता है कि 'वैज्ञानिक वानिकी' क्या थी और इसके पीछे अंग्रेजों का क्या उद्देश्य था। इसे अच्छे से समझ लेना, बच्चों!

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अधिनियम की तारीखें और तीनों प्रकार के वनों की परिभाषा व उनमें अंतर को अच्छे से समझना और याद करना।

• यह प्रश्न सीधे-सीधे पूछा जा सकता है कि वन कानूनों का लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा। आपको कम से कम तीन-चार प्रभावों का ज़िक्र उदाहरणों सहित करना होगा, जैसे लकड़ी, पशु, रिश्वत।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें घुमंतू खेती की प्रक्रिया, अंग्रेजों के प्रतिबंध के कारण और उसके परिणामों को अच्छी तरह से समझना और लिखना बहुत ज़रूरी है। 'क्यों' और 'क्या हुआ' इन दोनों पहलुओं पर ध्यान देना।

• यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि अंग्रेजों की 'सभ्यता' और वनवासियों के पारंपरिक अधिकारों के बीच क्या विरोधाभास था। इस पर ध्यान देना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'इजारेदारी' और 'अपराधी कबीले' जैसे शब्दों को याद रखना और इनका मतलब समझाना आना चाहिए। साथ ही, वन-समुदायों के शोषण के कारणों और प्रभावों पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› आधुनिक विश्व को समझने हेतु वनवासी व चरवाहा समुदायों की भूमिका जानना महत्वपूर्ण है।
› जंगल का महत्व; औपनिवेशिक काल में खेती, रेल, बागान से वन-विनाश शुरू हुआ।
› खेती विस्तार, यूरोप की माँग, व्यावसायिक फसलें, राजस्व हेतु वन-विनाश।
› रेलवे और जहाजों के लिए लकड़ी की भारी मांग से वन-विनाश बढ़ा।
› यूरोप की चाय, कॉफ़ी, रबड़ मांग हेतु प्राकृतिक वनों को साफ कर बागान बनाए गए।
› डायट्रिच ब्रैंडिस ने 'वैज्ञानिक वानिकी' शुरू की - लकड़ी की आपूर्ति हेतु वन प्रबंधन।
› भारतीय वन अधिनियम 1865; 1878 में वन आरक्षित, सुरक्षित, ग्रामीण वर्गों में बंटे।
› वन कानूनों से ग्रामीणों की रोज़मर्रा की गतिविधियाँ (लकड़ी, पशु चराना, फल) गैरकानूनी हो गईं।
› घुमंतू खेती पर प्रतिबंध से विस्थापन और विद्रोह।
› वन कानून: वनवासियों के शिकार पर रोक, अंग्रेजों का बड़े जानवरों का आखेट।
› ब्रिटिश 'इजारेदारी' से वन-समुदायों का शोषण, मजबूरन फैक्ट्रियों में काम।